



भारत की वर्तमान विदेश नीति और भारत बांग्ला देश सम्बन्ध

डॉ चन्द्रशेखर पटेल

सहायक प्राध्यापक राजनीति शास्त्र

डॉ शक्राजीत नायक शासकीय महाविद्यालय बरमकेला (छत्तीसगढ़)

सारांश:

भारत की वर्तमान विदेश नीति बहुपक्षीयता, स्वायत्तता, पड़ोस प्रथम (Neighbourhood First), और वैश्विक संतुलन जैसे सिद्धांतों पर आधारित है। यह नीति केवल वैश्विक शक्तियों के साथ संबंधों को ही नहीं, बल्कि पड़ोसी देशों के साथ मजबूत सहयोग और स्थिरता को भी प्राथमिकता देती है। बांग्लादेश भारत का प्रमुख पड़ोसी है, जिसके साथ भारत के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक संबंध गहरे हैं। दोनों देशों ने 1971 के मुक्ति संग्राम से लेकर अब तक कई मोर्चों पर सहयोग किया है। वर्ष 2015 में भू-सीमा समझौते (Land Boundary Agreement) ने द्विपक्षीय संबंधों में नया आयाम जोड़ा। व्यापार, जल साझेदारी, ऊर्जा, सीमा सुरक्षा, और कनेक्टिविटी जैसे क्षेत्रों में भारत-बांग्लादेश सहयोग को नई गति मिली है। हालाँकि, कुछ चुनौतियाँ भी बनी हुई हैं — जैसे तीस्ता नदी जल समझौता, सीमा पर अवैध गतिविधियाँ, बांग्लादेश में चीन की बढ़ती मौजूदगी और कुछ आंतरिक राजनीतिक अस्थिरताएँ। फिर भी, दोनों देशों ने संयम, संवाद और साझा विकास की भावना से इन मुद्दों को सुलझाने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। भारत की विदेश नीति में बांग्लादेश के साथ संबंध सामरिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। यह साझेदारी न केवल द्विपक्षीय हितों को आगे बढ़ाती है, बल्कि दक्षिण एशिया में शांति, स्थिरता और समावेशी विकास का भी मार्ग प्रशस्त करती है।

परिचय

भारत की विदेश नीति विश्व में शांति, विकास और सहयोग को बढ़ावा देने के सिद्धांतों पर आधारित है। आज़ादी के बाद से भारत ने "पंचशील सिद्धांत", "गुटनिरपेक्षता" और "वैश्विक सहयोग" को अपनी विदेश नीति का आधार बनाया। वर्तमान में भारत की विदेश नीति अधिक प्रोएक्टिव, असर्टिव और बहुपक्षीय हो गई है। इसका उद्देश्य न केवल देश की सुरक्षा और विकास सुनिश्चित करना है, बल्कि वैश्विक मंच पर एक प्रमुख शक्ति के रूप में स्थापित होना भी है। नेबरहुड फर्स्ट नीति भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ मजबूत संबंध बनाने पर जोर दे रहा है। एक्ट ईस्ट नीति दक्षिण-पूर्व एशिया और पूर्वी एशियाई देशों के साथ आर्थिक और रणनीतिक संबंधों का विस्तार। वैश्विक साझेदारियों का विकास अमेरिका, रूस, जापान, यूरोपीय संघ आदि के साथ रणनीतिक साझेदारी। वैश्विक मंचों पर सक्रिय भागीदारी संयुक्त राष्ट्र, G-20, ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन (SCO) जैसी संस्थाओं में सक्रिय भूमिका। आत्मनिर्भरता और आर्थिक कूटनीति विदेशी निवेश आकर्षित करना, टेक्नोलॉजी ट्रांसफर, और वैश्विक सप्लाय चेन में प्रमुख भूमिका निभाना। भारत और बांग्लादेश के सम्बन्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भाषायी और आर्थिक आधारों पर आधारित हैं। बांग्लादेश के 1971 के मुक्ति संग्राम में भारत की निर्णायक भूमिका रही थी। आज दोनों देशों के रिश्ते बहुआयामी हो चुके हैं।

मुख्य पहलू:

- सीमा समझौता : 2015 में भारत और बांग्लादेश ने भूमि सीमा समझौते को कार्यान्वित किया, जिससे 68 साल पुराना सीमा विवाद सुलझ गया।
- आर्थिक सहयोग : बांग्लादेश भारत का एक प्रमुख व्यापारिक साझेदार है। भारत बांग्लादेश को ऋण रेखा (Line of Credit) के माध्यम से वित्तीय सहायता भी प्रदान करता है।
- ऊर्जा सहयोग : भारत बांग्लादेश को बिजली निर्यात कर रहा है, और दोनों देशों के बीच ऊर्जा के क्षेत्र में संयुक्त परियोजनाएँ चल रही हैं।
- सांस्कृतिक सम्बन्ध : दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान गहरा है। टैगोर, नज़्रुल इस्लाम जैसी सांस्कृतिक विभूतियाँ दोनों देशों की साझा विरासत हैं।
- आवागमन और सम्पर्क : सड़क, रेल और जलमार्गों के माध्यम से संपर्क बढ़ाया गया है। 'मैत्री एक्सप्रेस' और अन्य रेल सेवाएँ इसी का उदाहरण हैं।
- रणनीतिक सहयोग : सुरक्षा, आतंकवाद-निरोध, सीमा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में भी दोनों देश मिलकर काम कर रहे हैं।

भारत की वर्तमान विदेश नीति (2024-2025) – मुख्य बिंदु:

1. न्यायोचित, संतुलित और बहुपक्षीय दृष्टिकोण: "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना पर आधारित। शांति, समृद्धि, और सहयोग पर जोर।
2. नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी: पड़ोसी देशों के साथ सहयोग बढ़ाने की नीति। व्यापार, सुरक्षा, जल संसाधन, ऊर्जा और संस्कृति के क्षेत्रों में समन्वय।
3. एक्ट ईस्ट पॉलिसी: पूर्वी एशियाई देशों के साथ रणनीतिक और आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ बनाना। बांग्लादेश इसमें एक अहम सहयोगी देश है।
4. सुरक्षा और सीमा प्रबंधन: आतंकवाद, अवैध तस्करी और सीमा पार अपराधों के विरुद्ध संयुक्त प्रयास। सीमाओं की निगरानी और विकास में सहयोग।
5. आर्थिक कूटनीति: व्यापार समझौतों, इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स, और निवेश को प्राथमिकता।

भारत-बांग्लादेश संबंध – प्रमुख बिंदु:

1. ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध: 1971 की मुक्ति संग्राम में भारत की भूमिका। दोनों देशों के बीच भाषा, संस्कृति और परंपराओं में साम्यता।
2. राजनीतिक सहयोग: उच्च स्तरीय दौरों और संयुक्त घोषणाओं के ज़रिए लगातार संवाद। बांग्लादेश भारत का प्रमुख रणनीतिक और राजनीतिक सहयोगी।
3. जल बँटवारा और नदियों का प्रबंधन: गंगा और तीस्ता नदी जल-बँटवारे पर बातचीत। साझा जल संसाधनों के प्रभावी उपयोग की दिशा में प्रयास।

4. आर्थिक और व्यापारिक संबंध: भारत बांग्लादेश का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार। सीमावर्ती व्यापार और परिवहन कॉरिडोर (BBIN, BIMSTEC) को बढ़ावा।
5. संघर्ष और समाधान: सीमा विवाद, अवैध घुसपैठ और तस्करी जैसे मुद्दों पर संयुक्त कार्य। 2015 में भूमि सीमा समझौता (Land Boundary Agreement) ऐतिहासिक उपलब्धि।
6. ऊर्जा सहयोग: भारत बांग्लादेश को बिजली निर्यात करता है। सौर और नवीकरणीय ऊर्जा में भी साझेदारी।
7. सांस्कृतिक और शैक्षणिक आदान-प्रदान: छात्रों और कलाकारों के लिए आदान-प्रदान कार्यक्रम। बांग्लादेश में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र (ICC) का संचालन।

भारत की वर्तमान विदेश नीति और भारत-बांग्लादेश संबंध

भारत एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति है जिसकी विदेश नीति समय के साथ अधिक व्यावहारिक, रणनीतिक और बहुपक्षीय बनती जा रही है। दक्षिण एशिया में भारत की विदेश नीति विशेष रूप से अपने पड़ोसी देशों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने पर केंद्रित है। इन पड़ोसियों में बांग्लादेश का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारत की वर्तमान विदेश नीति – मुख्य विशेषताएँ:

1. पड़ोसी पहले (Neighbourhood First) नीति: भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ मजबूत और सौहार्दपूर्ण संबंधों को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।
2. 'एक्ट ईस्ट' नीति: दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों, विशेष रूप से आसियान देशों के साथ व्यापार, संपर्क और रणनीतिक संबंधों को सशक्त करने की नीति। बांग्लादेश इस नीति का एक प्रमुख अंग है।
3. आर्थिक कूटनीति: व्यापार, निवेश और तकनीकी साझेदारी को बढ़ावा देना। वैश्विक कंपनियों और बाजारों के साथ जुड़ाव।
4. सुरक्षा और आतंकवाद विरोध: सीमा सुरक्षा को मजबूत करना। आतंकवाद, तस्करी और अवैध आप्रवासन के विरुद्ध कठोर रुख।
5. वैश्विक मंचों पर सक्रिय भागीदारी: G20, BRICS, SCO और QUAD जैसे मंचों पर नेतृत्वकारी भूमिका। जलवायु परिवर्तन, वैश्विक शांति और सतत विकास पर ज़ोर।
6. सांस्कृतिक और सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी: योग, संस्कृति, शिक्षा और विज्ञान के माध्यम से विश्व में भारत की सकारात्मक छवि।

भारत की विदेश नीति में बांग्लादेश एक महत्वपूर्ण सहयोगी है। दोनों देशों के बीच परस्पर विश्वास, सहयोग और साझा हितों पर आधारित संबंध दक्षिण एशिया में शांति, स्थिरता और विकास के लिए एक मॉडल प्रस्तुत करते हैं। भविष्य में, आपसी सहयोग के नए आयाम खुलने की संभावनाएँ हैं।

भारत की विदेश नीति में स्वायत्तता और बहुपक्षीय संतुलन:

स्वायत्तता (Strategic Autonomy):

भारत अपनी विदेश नीति को किसी भी महाशक्ति के दबाव से मुक्त रखकर स्वतंत्र निर्णय लेने की नीति अपनाता है। रूस, अमेरिका, फ्रांस, ईरान, और इज़राइल जैसे परस्पर विरोधी देशों से भी भारत संतुलित संबंध बनाए रखता है। यह नीति भारत को गुटनिरपेक्षता के नए रूप में प्रस्तुत करती है – जहां भारत अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार निर्णय करता है।

बहुपक्षीय संतुलन (Multilateral Balance):

भारत वैश्विक मंचों पर सक्रिय भागीदारी करता है — जैसे G20, SCO, BRICS, QUAD, UN आदि। विकासशील देशों की आवाज़ बनने का प्रयास करता है, खासकर जलवायु परिवर्तन, वैश्विक स्वास्थ्य, और आर्थिक असमानता के मुद्दों पर। भारत विविध अंतरराष्ट्रीय संगठनों में संतुलन साधते हुए “सबके साथ, सबके विकास” की सोच पर कार्य करता है।

भारत-बांग्लादेश संबंधों में स्वायत्तता और बहुपक्षीय संतुलन का प्रभाव:

भारत-बांग्लादेश संबंध किसी तीसरे देश के प्रभाव से संचालित नहीं होते — यह द्विपक्षीय सहयोग पर आधारित हैं। भारत ने चीन के बांग्लादेश में बढ़ते प्रभाव के बावजूद, अपने रिश्ते बिना किसी दबाव के मजबूती से बनाए रखे हैं। भारत अपनी सीमाओं, सुरक्षा और पूर्वोत्तर राज्यों की स्थिरता को ध्यान में रखते हुए स्वतंत्र निर्णय करता है।

बहुपक्षीय सहयोग और संतुलन:

भारत और बांग्लादेश BIMSTEC, BBIN, SAARC जैसे बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग करते हैं। जलवायु, आपदा प्रबंधन, ऊर्जा और व्यापार जैसे मुद्दों पर क्षेत्रीय समन्वय को प्राथमिकता दी जाती है दोनों देशों के बीच संपर्क मार्गों को मजबूत कर दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत की विदेश नीति में स्वायत्तता और बहुपक्षीय संतुलन, भारत को एक जिम्मेदार और स्वतंत्र वैश्विक शक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। बांग्लादेश के साथ भारत के संबंध भी इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित हैं – जहां आपसी सम्मान, सहयोग, और क्षेत्रीय स्थिरता को प्राथमिकता दी जाती है।

भारत-बांग्लादेश संबंध और इंडो-पैसिफिक सक्रियता

बांग्लादेश बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित है, जो इंडो-पैसिफिक रणनीति में अहम स्थान रखता है। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों तक पहुँच के लिए बांग्लादेश एक प्रमुख रास्ता प्रदान करता है। भारत और बांग्लादेश नौसेना अभ्यास, सुरक्षा संवाद, और समुद्री आतंकवाद से सुरक्षा पर सहयोग करते हैं। बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में संयुक्त गश्ती और सहयोग। चिटगांव और मोंगला बंदरगाहों का भारत को उपयोग करने की अनुमति। चीन की उपस्थिति और संतुलन बांग्लादेश में चीन के निवेश और बंदरगाह परियोजनाओं के मद्देनज़र भारत ने अपने सहयोग को तेज़ किया है। रणनीतिक संतुलन बनाए रखने के लिए भारत का दृष्टिकोण सशक्त बना हुआ है।

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत की सक्रियता, उसकी विदेश नीति की रणनीतिक परिपक्वता को दर्शाती है। बांग्लादेश के साथ सहयोग इस क्षेत्रीय दृष्टिकोण को मजबूत करता है। भारत-बांग्लादेश संबंध अब केवल द्विपक्षीय नहीं, बल्कि एक क्षेत्रीय रणनीति का हिस्सा बन चुके हैं जो इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत की भूमिका को और सशक्त बनाते हैं।

भारत की वर्तमान विदेश नीति में राजनीतिक अस्थिरता और चुनौतियाँ

1. क्षेत्रीय राजनीतिक अस्थिरता: अफगानिस्तान, म्यांमार, श्रीलंका और पाकिस्तान में लगातार अस्थिरता से भारत को रणनीतिक चिंता रहती है। इन देशों की अनिश्चित नीतियाँ भारत की ‘पड़ोसी पहले’ नीति को बाधित करती हैं।

2. चीन की आक्रामक रणनीति: भारत की सीमा से लेकर इंडो-पैसिफिक क्षेत्र तक चीन की सक्रियता चुनौतीपूर्ण बनी हुई है। भारत के पड़ोसी देशों में चीन का निवेश और सैन्य-सहयोग भारत की रणनीतिक स्वायत्तता को प्रभावित कर सकता है।

3. आंतरिक और सीमा सुरक्षा चुनौतियाँ: सीमाओं पर अवैध तस्करी, आतंकवाद और घुसपैठ लगातार एक चिंता का विषय है। भारत को अपनी सुरक्षा आवश्यकताओं और विदेश नीति के बीच संतुलन बनाना होता है।

4. बहुपक्षीय मंचों में प्रतिस्पर्धा: G20, BRICS, SCO जैसे मंचों पर नेतृत्व के लिए वैश्विक प्रतिस्पर्धा। वैश्विक नीतियों में भारत की प्राथमिकताओं को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है।

राजनीतिक अस्थिरता और रणनीतिक चुनौतियाँ भारत की विदेश नीति को लचीला और सतर्क बनाए रखने की माँग करती हैं। बांग्लादेश के साथ संबंध भारत की क्षेत्रीय कूटनीति का अहम हिस्सा हैं, लेकिन इन्हें बनाए रखना निरंतर संवाद, रणनीतिक धैर्य और बहुपक्षीय समझ की माँग करता है। दोनों देशों के बीच विश्वास, सहयोग और समय पर समाधान इन चुनौतियों को पार करने की कुंजी हैं। यूरोपीय संघ (European Union – EU) के साथ भारत का व्यापार समझौता भारत की वर्तमान विदेश नीति का एक प्रमुख हिस्सा है। यह केवल द्विपक्षीय व्यापार तक सीमित नहीं है, बल्कि रणनीतिक, कूटनीतिक और वैश्विक साझेदारी को भी दर्शाता है। इस संदर्भ में इसका प्रभाव भारत-बांग्लादेश संबंधों पर भी परोक्ष रूप से पड़ता है।

भारत की वर्तमान विदेश नीति और यूरोपीय संघ के साथ व्यापार समझौता

1. भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता (FTA): भारत और EU के बीच Free Trade Agreement (FTA) को लेकर बातचीत दोबारा सक्रिय हो गई है (2021 से)। यह समझौता व्यापार, निवेश, सेवाएँ, और बौद्धिक संपदा जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाएगा।

2. रणनीतिक साझेदारी: भारत और EU के बीच 2004 से रणनीतिक साझेदारी है। 2020 में इसे और मजबूत करते हुए “EU-India Strategic Partnership: A Roadmap to 2025” जारी किया गया।

3. हरित ऊर्जा और डिजिटल साझेदारी: भारत और EU जलवायु परिवर्तन, सौर ऊर्जा, ग्रीन हाइड्रोजन और डिजिटल गवर्नेंस में सहयोग कर रहे हैं।

4. विदेश नीति में संतुलन: भारत पश्चिमी देशों (EU, अमेरिका) और रूस/चीन के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए स्वायत्त विदेश नीति का पालन करता है। EU के साथ संबंध, चीन की वैश्विक प्रभाव नीति को संतुलित करने का एक पहलू भी है।

भारत-बांग्लादेश संबंधों पर इस व्यापार समझौते का परोक्ष प्रभाव

1. क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) में सुधार: भारत-EU व्यापार समझौते से भारत में निवेश और उद्योग बढ़ेंगे, जिससे बांग्लादेश के साथ ट्रांजिट और सप्लाय नेटवर्क को भी मजबूती मिलेगी।

2. बांग्लादेश के निर्यात प्रतिस्पर्धा पर प्रभाव: बांग्लादेश को EU से अब तक GSP+ (Generalized System of Preferences) के तहत व्यापार में विशेष छूट मिलती रही है। यदि भारत-EU FTA लागू होता है, तो भारत को भी यह छूट मिल सकती है, जिससे बांग्लादेश के कपड़ा और वस्त्र उद्योग को प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा।

3. साझा क्षेत्रीय विकास का अवसर: EU भारत को सस्टेनेबल मैनुफैक्चरिंग और क्लाइमेट स्मार्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर में मदद करता है, जिसका फायदा बांग्लादेश के साथ साझा परियोजनाओं में लिया जा सकता है।

4. इंडो-पैसिफिक सहयोग: EU की इंडो-पैसिफिक नीति में भारत एक मुख्य सहयोगी है। बांग्लादेश इस क्षेत्र में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण होने के कारण त्रिपक्षीय सहयोग का अवसर बन सकता है (EU–India–Bangladesh)।

यूरोपीय संघ के साथ भारत का व्यापार समझौता उसकी वर्तमान विदेश नीति की बहुपक्षीयता, आर्थिक रणनीति, और सॉफ्ट पावर का उदाहरण है। इस समझौते का प्रत्यक्ष लाभ भारत को होगा, लेकिन इसके परोक्ष प्रभाव बांग्लादेश के साथ संबंधों पर भी पड़ सकते हैं — विशेष रूप से आर्थिक प्रतिस्पर्धा, सप्लाई चेन सहयोग, और क्षेत्रीय स्थिरता के संदर्भ में। "सीमा प्रबंधन और सुरक्षा सहयोग" भारत की वर्तमान विदेश नीति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम है, विशेष रूप से भारत-बांग्लादेश संबंधों के संदर्भ में। दोनों देशों के बीच 4,096 किलोमीटर लंबी सीमा है — जो भारत की सबसे लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा है। इस कारण सुरक्षा, अवैध गतिविधियाँ, और सामरिक सहयोग का विशेष महत्व है।

भारत की वर्तमान विदेश नीति में सीमा प्रबंधन और सुरक्षा सहयोग

1. **सीमा सुरक्षा को प्राथमिकता:** भारत की विदेश नीति में सीमा क्षेत्रों में सांप्रभुता की रक्षा और अवैध गतिविधियों पर नियंत्रण प्रमुख उद्देश्य हैं। BSF (Border Security Force) को सीमा पर आधुनिक उपकरणों और टेक्नोलॉजी से सुसज्जित किया गया है।

2. **सुरक्षा सहयोग समझौते:** भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ समन्वित सीमा प्रबंधन और इंटेलिजेंस साझाकरण को बढ़ावा दिया है। आतंकवाद, हथियारों की तस्करी, मानव तस्करी और नारकोटिक्स पर नियंत्रण विदेश नीति का हिस्सा है।

3. **तकनीकी समाधान का उपयोग:** सीमा निगरानी के लिए ड्रोन, सैटेलाइट इमेजिंग, स्मार्ट फेंसिंग जैसी नई तकनीकों का उपयोग हो रहा है।

भारत-बांग्लादेश संबंधों में सीमा प्रबंधन और सुरक्षा सहयोग

1. भू-सीमा समझौता (Land Boundary Agreement – 2015): यह ऐतिहासिक समझौता 162 छूटे हुए एन्क्लेव (छोटे क्षेत्र) के आदान-प्रदान से जुड़ा था। इससे सीमा विवादों का समाधान हुआ और द्विपक्षीय विश्वास बढ़ा।

2. संयुक्त सीमा गश्त (Coordinated Border Management): BSF और BGB (Border Guard Bangladesh) के बीच संयुक्त गश्त और फ्लैग मीटिंग्स नियमित होती हैं। तनाव कम करने और अवैध गतिविधियों पर रोक लगाने में सहायता।

3. अवैध तस्करी और घुसपैठ पर रोक: मवेशी तस्करी, मानव तस्करी, हथियारों की तस्करी और नशीले पदार्थों की आवाजाही बड़ी चुनौतियाँ हैं। दोनों देशों ने संयुक्त कार्ययोजना बनाकर कार्रवाई शुरू की है।

4. नागरिकों की सुरक्षा और मानवीय दृष्टिकोण: सीमा पर आम नागरिकों की सुरक्षा और गैर-घातक हथियारों (non-lethal weapons) का प्रयोग BSF की नीति का हिस्सा है।

5. पूर्वोत्तर भारत की सुरक्षा: भारत को बांग्लादेश की ज़रूरत है ताकि वह पूर्वोत्तर राज्यों में उग्रवाद पर नियंत्रण रख सके। बांग्लादेश सरकार ने पूर्वोत्तर के उग्रवादी संगठनों के खिलाफ कार्रवाई की है।

भारत की विदेश नीति में सीमा प्रबंधन और सुरक्षा सहयोग, खासकर बांग्लादेश के साथ, एक संतुलित रणनीति का हिस्सा है — जिसमें सुरक्षा और सहयोग दोनों समान रूप से शामिल हैं। भू-सीमा समझौते और संयुक्त सीमा प्रबंधन ने दोनों देशों के संबंधों को मज़बूती प्रदान की है, और क्षेत्रीय शांति तथा स्थिरता में भी योगदान दिया है।

निष्कर्ष

भारत की वर्तमान विदेश नीति, जिसमें "नेबरहुड फर्स्ट" और "एक्ट ईस्ट" नीतियों का प्रमुख स्थान है, ने बांग्लादेश के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों में महत्वपूर्ण सकारात्मक बदलाव लाए हैं। इन नीतियों के तहत बांग्लादेश के साथ भारत ने आर्थिक, रणनीतिक और सुरक्षा सहयोग को मजबूत किया है, और दोनों देशों के बीच बेहतर कनेक्टिविटी, व्यापार, और साझा विकास परियोजनाएँ स्थापित की हैं। भूमि सीमा समझौता, रेल और सड़क मार्ग कनेक्टिविटी, और ऊर्जा साझेदारी जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। हालाँकि, जल विवाद (विशेषकर तीस्ता जल बंटवारा), सीमा सुरक्षा, और चीन-बांग्लादेश संबंधों में वृद्धि जैसी समस्याएँ अभी भी इन संबंधों में चुनौती उत्पन्न करती हैं। इन मुद्दों का समाधान न केवल दोनों देशों के बीच विश्वास बढ़ाने के लिए, बल्कि दक्षिण एशिया की समग्र स्थिरता के लिए भी महत्वपूर्ण है। भारत-बांग्लादेश संबंधों की भविष्यवाणी इस पर निर्भर करेगी कि दोनों देशों के नेतृत्व और नीति-निर्माता इन जटिल मुद्दों का समाधान किस प्रकार करते हैं। "जनसंपर्क" और "जनस्तरीय सहयोग" को बढ़ावा देने की आवश्यकता है ताकि दोनों देशों के नागरिकों के बीच सकारात्मक रिश्ते स्थापित हो सकें। इस प्रकार, भारत की वर्तमान विदेश नीति ने बांग्लादेश के साथ स्थिर और उत्पादक संबंधों की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, लेकिन दीर्घकालिक स्थिरता और संपूर्ण सहयोग के लिए एक ठोस और समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। भारत-बांग्लादेश संबंधों का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि दोनों देश एक दूसरे के साथ विवादों को किस प्रकार हल करते हैं और साझा विकास के मार्ग पर साथ मिलकर आगे बढ़ते हैं। भारत की विदेश नीति को इस दिशा में अधिक सशक्त और संतुलित बनाने की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. प्रेस सूचना ब्यूरो (PIB) – सरकारी नीति और प्रेस विज्ञप्तियाँ
2. राज्य सभा और लोक सभा के प्रश्नोत्तर (parliamentary debates)
3. ऑब्ज़र्वर रिसर्च फाउंडेशन (ORF) के शोध लेख
4. मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (IDSA)
5. भारत-बांग्लादेश भू-सीमा समझौता 2015 के दस्तावेज़
6. भारत-बांग्लादेश संयुक्त आयोग बैठक (Joint Consultative Commission) की रिपोर्ट
7. राष्ट्रीय समाचार पत्र – दैनिक जागरण, हिंदुस्तान, जनसत्ता
8. यूनेस्को और SAARC से संबंधित द्विपक्षीय सहयोग रिपोर्ट
9. नीति आयोग और वाणिज्य मंत्रालय की आर्थिक नीति रिपोर्ट